

dfr & ije 'kafri zrk; dñh 'kafrik fofokku
 jfrnk & i-iv-(kewfrZ108vdk;Z
 Jh fo'knllkxjth egkjkt
 lañkj & r'ih;] 1000 izfr:ka] tqk;Z] 2008
 laiknu & eqfuh fo'kky llxj] {kq- fon'kZ llxj] cz-ykyth
 ladyu & cz-Tiksfir] vkIFkk] liukrh
 laikstu & cz-llsuw] fdj.k] vkjhrrh
 lEidZ lw= & 9829127533] 9829076085
 ÅfirIFky & 1 tsuljsoj lfevr] fuezydpkjxks/kk
 2142] fuezyfudat] jsfMiksedv] efugjksack
 jkLrk] t;iqj- eksdky% 9414812008
 Qksu% 0141&2319907/4kj½ 3294018/4k½
 2 Jh 108 vkpk;Z fo'kn llxj ekè:fed fo|ky;]
 cjsfni:dykalftxkllxj½ Å½] Qksu 07581&274244
 3 Jh jks'kdokj tsuBdkkj] ,&107] cq/kfogkj
 vyoj] Qksu % 9414016566
 4 Jh lJohisij lVkslZ] t;iqj- eks- 9772220442

volj & 1008 JheftusJhK; osh izfr'EkegsRlo
 frukad1 ekpZ ls 3 ekpZ] 2008
 vk;ksd & Jh fn- tsuefnj jtkkkl] ft;k t;iqj
 ikou llkfUè; & i-iv-(kewfrZ vkpk;Z 108 Jh fo'knllkxjth
 llsu; & Jh fn- tsuefnj jtkkkl] ft;k t;iqj

exel & clartsu] Jh lJohfizVlZ , MlV's'kulZ
 ,l-ch-ch-ts-dsups] pkahdhVllky] t;iqj
 Qksu%½dk½ 2615920½fu½ 2630236
 eks- 9887484980] 9772220442

कृति – परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ विधान
 रचयिता – प.पू.क्षमामूर्ति 108 आचार्य
 श्री विशदसागरजी महाराज
 संस्करण – चतुर्थ, 1000 प्रतियां, अक्टूबर 2008
 संपादन – मुनिश्री विशाल सागर,
 संकलन – ब्र. ज्योति, आस्था, सपना दीदी
 संयोजन – किरण, आरती दीदी
 सम्पर्क सूत्र – 9660996425, 9829127533, 9829076085
 प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मल कुमार गोधा
 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनहारों का
 रास्ता, जयपुर. मोबाइल : 9414812008
 फोन : 0141-2319907(घर) 3294018(आ.)
 2. श्री 108 आचार्य विशद सागर माध्यमिक विद्यालय,
 बरौदियाकलां, जिला-सागर(म.प्र.), फोन 07581-274244
 3. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार
 अलवर, फोन : 9414016566
 4. श्री सरस्वती पेपर स्टोर्स, जयपुर. मो. 9772220442

सौजन्य – सुशील कुमार जैन – नीरा जैन
 महावीर एन्टरप्राइजेज
 एन-31, भगतसिंह कॉलोनी, निवाई (टोंक)
 मो. 9414303982, 9414029175
 फोन : 01438-223956

मुद्रक – बसंत जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
 एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर
 फोन : (का.) 2615920 (नि.) 2630236
 मो. 9772220442, 9887484980

आद्य कथन

हे नाथ ! आपकी पूजा से, सारे संकट कट जाते हैं।
जो भाव सहित भक्ति करते, वह विशद शांति को पाते हैं।
तब अर्चा करके नाथ आज सौभाग्य जगाने आए हैं।
हे दया सिन्धु ! अब दया करो, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

यह परम सत्य हैं जो श्रावक जिनेन्द्र प्रभु की श्रद्धा सहित अर्चा करता है उसके जीवन में सर्व सुख शांति की प्राप्ति होती है इसीलिए अन्य श्रावक अपने नगर में जिनप्रभु की प्रतिमा स्थापित कर उनकी भावभक्ति कर पुण्यार्जन करता है और अपना सौभाग्य जगाता है और शांतिमय जीवन व्यतीत करता है।

जयपुर शहर का समीपवर्ती ग्राम राजावास में दिनांक 1 से 3 मार्च सन् 2008 तक श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ प्रतिष्ठाचार्य पं. डॉ. सनत कुमार जी जयपुर ने बड़ी भव्यता के साथ कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

पं. जी ने श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान भक्तामर आदि विधान मेरे द्वारा रचित कई बार सम्पन्न कराए, उनकी भाषा शैली सरलता लयबद्धता को देखते हुए कहा आचार्य श्री आप शांतिविधान की भी रचना करें जो हर कार्यों में सम्पन्न कराया जाता है यही सरलता मिले तो लोगों को उससे अधिक लाभ होगा। पं. जी की बात को ध्यान में रखते हुए इस शांतिविधान की रचना अल्प बुद्धि से मैंने की जो शायद सभी मोक्षमार्गी श्रावक जनों के लिए कल्याणकारी बनेगी। इसी भावना के साथ ज्ञानी जनों से आग्रह है कि यदि विधान रचना में किसी प्रकार की भूल को भूलकर सार ग्रहण कर हमें अनुग्रहीत करें।

— आचार्य विशद सागर

गुरुं प्रति श्रद्धान्वितः

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावें ! इस विराट भावना को हृदय में संजोये हुए क्षमामूर्ति परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने महान् तप साधना व ज्ञानाराधना से जगत् के प्राणियों की सुख की कामना की हैं, तथा अज्ञानियों को ज्ञानमार्ग एवं भक्ति मार्ग का उपदेश देकर उनका मार्ग प्रशस्त किया है और यह तभी संभव है जब जगत की सम्पूर्ण मूर्च्छाओं से स्वयं को विरक्त कर ज्ञान, ध्यान और तप में लीनता को प्राप्त कर निर्ग्रन्थ अवस्था धारण की जाती है। निर्ग्रन्थ अवस्था में ग्रन्थ की रचना निर्ग्रन्थता को बढ़ाने वाली होती है। अनेक दुःखों से छुटकारा दिलाने वाली होती और सुख को प्रदान करने वाली यह ग्रन्थ रचना है। इसी श्रृंखला में आचार्य श्री विशद सागर जी मुनिराज द्वारा सरल और सुबोध भाषा में रचित सारभूत विधान 'परम शांतिप्रदायक 'श्री शांतिनाथ विधान' अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। मनुष्य का सांसारिक जीवन कष्टमय होता है। अतः इस विधान को भक्ति भाव से करके अपने कर्मों की निर्जरा कर सुखमय जीवन बना सकता है।

श्री शान्ति विधान की पूजा करने-कराने का वर्तमान में प्रचलन अधिक बढ़ा है। यह अच्छी बात है, अतः अपेक्षा है कि पूजा में निहित भावों को समझकर भक्ति में डुबकी लगाकर भक्ति रस का आनन्द ले सकें, इसी भावना से आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने सरल और सरस भाषा का प्रयोग अपने द्वारा रचित शान्ति विधान की पूजा में किया है।

आचार्य श्री का समाज पर महान् उपकार है तथा आपने अभीक्षण ज्ञान से साहित्य को भी उपकृत किया है। यद्यपि निर्ग्रन्थ जीवन सहजता का महाकाव्य होता है, निर्द्वन्द्व छन्द में बँधे उसके व्यक्तित्व का मधुर संगीत गीतमान होता है, उसकी गति-स्थिति, प्रवृत्ति, प्रकृति के साथ लयबद्ध होती है, संत का जीवन आश्चर्यों का महालेख नहीं होता, किन्तु उनमें चेतना का उन्मेष होता है, उसके हर चरण आचरण में मनुष्य नये उच्छ्वास, नई प्रेरणा तथा नई शक्ति का अनुभव करता है। इससे समाज और साहित्य को नई दिशा प्राप्त होती है।

पूज्य आचार्य श्री की साहित्य सपर्या प्रवाहमान रहे तथा रत्नमय की आराधना से संघ परिपूर्ण हो इसी भावना से आचार्य श्री के चरणारविन्द में कोटि-कोटि नमन।

डॉ. सनत कुमार जैन

विभागाध्यक्ष जैन दर्शन,

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

मंगलाष्टक

-आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी ।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी ॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी ।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥1॥

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान् ।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान ॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी ।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥2॥

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी ।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी ॥
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी ।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ॥3॥

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव ।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव ॥
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी ।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी ॥4॥

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव ।
श्रीयुत तीर्थंकर के माता-पिता यक्ष-यक्षी भी एव ॥
देवों के स्वामी बतिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी ।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी ॥5॥

सुतप वृद्धि करके सर्वोषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार ।
वसु विधि महा निमित्त के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार ॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी ।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥6॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी ।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी ॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी ।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥7॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार ।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार ॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी ।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥8॥

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में ।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में ॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी ।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी ॥9॥

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा ।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा ॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी ।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी ॥10॥

॥ इति मंगलाष्टकम् ॥

ध्वजा दण्ड शुद्धि विधान

कलश शुद्धि के साथ हो तो केवल शुद्धि करें अगर अलग हो तो पूर्ण विधि करें।

नवदेवता पूजन या अर्घ्य चढ़ावें -

मन्त्र अर्घ चढ़ाने का - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं अहंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय नवदेवेभ्यः जल फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज दण्ड पर पुष्पक्षेपण करके मन्त्रित करें -

मंत्र - ॐ हूं क्षं फट् किरिटिं किरिटिं घातय-घातय पर विघ्नान् स्फोटय-
2 सहस्र खण्डान् कुरु-2 पर मुद्रां छिन्द-2 पर मंत्रान् भिन्द-2 क्षां क्षः
वाः वाः हूं फट् स्वाहा।

नौ बार णमोकार मन्त्र जपना व पुष्प क्षेपण करना।

सिद्ध आचार्य भक्ति पाठ -

ध्वजादंड पर पुष्पक्षेपण करें।

मंत्र - ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति नंद नंद वर्धस्व वर्धस्व
विजयस्व विजयस्व अनुसाधि अनुसाधि पुनिहि पुनिहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं
मांगल्यं जय जय पुष्पांजलि क्षिपेत्।

शुद्धि विधान -

सर्वोषधि से - मंत्र - ॐ ह्रीं सर्वोषधिना ध्वज दंड शुद्धि करोमि।

जल से - मंत्र - ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते जलेन ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

स्वस्तिक बनावें - ॐ ह्रीं श्री ध्वज दंडे स्वस्तिक करोमि।

सूत्रेण सूत्र बान्धे - ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वज दंड परिवेष्टयामि।

पुष्पं - ॐ ह्रीं दश चिह्नाष्ट गुंटिकालंकृत ध्वजायै पुष्पं।

झण्डारोहण

ॐ ह्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (जल से शुद्धि)

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यम्। (अर्घ चढ़ावें)

ॐ ह्रीं सर्वोषधिद्वारा ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीं नमोऽर्हते पवित्रजलेन ध्वजदण्ड शुद्धि करोमि।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा।

रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रये प्रकृत केवलबोधरूपम्।
संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सन् मंगल वाद्य घोषे॥

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शांतिर्भवतु
स्वाहा तथा ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासन पताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव
भव वषट् स्वाहा।

अंगन्यास विधि

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और ततद दिशाओं से आने वाले विघ्नों की निर्वृति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास किया जावे दोनों हाथों के अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठापर्यंत अंगुलियों में क्रम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेश्वरी की स्थापना करें। पूजन, जाप या हवन में बैठने वाले महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबर से मिलाकर सामने करें तथा मंत्र बोलने पर अपने मस्तक से स्पर्श करें।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों के अंगूठों को जोड़कर मस्तक से लगाना है।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं मध्यमाभ्यां नमः।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की मध्यमा (बीच) की अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं हौं, अनामिकाभ्यां नमः।

यहाँ पर अपने दोनों हाथों की अनामिका अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः कनिष्ठाभ्यां नमः।

यहाँ पर दोनों हाथों को कनिष्ठा अँगुलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां हीं हूं हौं हः करतलाभ्यां नमः।

यहाँ दोनों गदियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां हीं हूं हौं हः कर पृष्ठाभ्यां नमः।

यहाँ पर दोनों हाथों की हथेलियों को मस्तक से लगाना है।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से अपने सिर को स्पर्श करें।

ॐ हीं णमो सिद्धाणं हीं मम वंदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करना है।

ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से हृदय स्पर्श करें।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं हौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर दाहिने हाथ से दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर अपने शरीर का स्पर्श करना है।

ॐ हीं णमो सिद्धाणं हीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर अपने वस्त्रों का स्पर्श करना है।

ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं मम पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब अपनी पूजा की थाली का स्पर्श करें।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं हौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अपने आसन को देखकर मार्जन करें।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अपनी अंजली में जल लेकर चारों ओर फेंके।

अमृत शुद्धि मंत्र

ॐ हीं अमृते अमृतोदभवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रों द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः हीं स्वाहा।

अब अपनी अंजली में जल लेकर अपने सिर पर छोड़ें।

रक्षा सूत्र बंधन मंत्र

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रव शांतिं कुरु कुरु ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा वंधनं करोमि एतस्यं संमृद्धिस्तु। ॐ हीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत पराक्रमाय ते भवतु।

यहाँ पर सभी नौ स्थानों पर चंदन लगाएँ (मस्तक माया) सिर दोनों कान, गला, दोनों हाथ, हृदय एवं नाभि पर।

दिग्बंधन मंत्र

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां पूर्व दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यहाँ पर सौधर्म इंद्र अपने दाहिने हाथ से पूर्व दिशा में पुष्प छोड़ें।

ॐ हीं णमो सिद्धाणं हीं दक्षिण दिशात समागतं विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब दक्षिण दिशा में सभी इन्द्र पुष्प क्षेपण करें।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं हूँ पश्चिम दिशात समागतं विघ्नान् निवारय
निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा ।

अब पश्चिम दिशा में सभी पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें ।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं हौं उत्तर दिशात समागतं विघ्नान् निवारय
निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा ।

अब उत्तर दिशा में सभी लोग पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें ।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व दिशात समागतं विघ्नान्
निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा ।

अब सभी समस्त एवं उर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसों क्षेपण करें ।

परिणाम शुद्धि मंत्र

विधि विधातुं यजनोत्सवे डोहादि मतूच्छम पनोद अनन्यचिता
कृति मक्षिधमि स्वसिद्धि लक्ष्मीमपि हाप्यामि ।

अब सभी लोग अपने-अपने गृहकार्यों को छोड़ दें । जब तक यह विधान चलेगा तब तक के लिए अपने गृह संबंधी सभी कार्यों से निवृत्ति होकर यह विधान करूँगा/ करूँगी । मैं मन, वचन, काय से प्रतिज्ञा करता हूँ/करती हूँ ।

रक्षा मंत्र

ॐ णमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा ।

यहाँ पर पंडितजी सभी पात्रों पर पीली सरसों को सात बार मंत्रित करें ।

शांति मंत्र

ॐ हूँ फट किरीटिं किरीटिं घातक-घातक पर विघ्नान् स्फोटय
स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द
भिन्द क्षां क्षं वः फट स्वाहा ।

पुष्प लेकर इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सभी पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें ।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ नमः परम शांताय शांति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय चिह्न
यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्ह नमः स्वाहा ।

यहाँ पर सभी पात्रों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनावें (शादी-शुदा को दो जनेऊ पहनावें ।)

ॐ हां हीं हूं हौं हः ऐतेषां पात्र शुद्धि मंत्र सर्वांग शुद्धिः भवतु ।

यहाँ पर पात्रों पर जल छिड़ककर पात्रों की अंतिम शुद्धि करें ।

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि
करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें ।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्रह्रस्व
ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं
पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा ।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट
स्वाहा । (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया
हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें ।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें ।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम् ।

तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम् ॥

मन्त्र :ह्रस्व ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः । ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः ।
ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः । ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः । ॐ

चतुःशरणाय नमो नमः अस्य..... (विधान का नाम) नामधेय
यजमानस्य (विधान कर्ता का नाम) नामधेय-याजकस्य

च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम-
परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते
आयुः प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां । त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते

मांगल्यं-मांगल्यं भवतु । सपरिवार वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व-विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु ॥

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितपण्डितपुण्डरीकं ।

श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयामः ॥

मण्डपायार्घ्यं दद्यात् । (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें ।)

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क दें ।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्मः ।

मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमशः नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें ।

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नमः चतुर्णिकाय देवाः सर्व विघ्नः निवारणार्थाय... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमारः देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।
8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेन्द्र देवाः..... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः..... मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः..... विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्री मदादि ब्राह्मणो मते अस्मिन् विधीयमाने श्री णमोकार महामंडल विधानकार्ये श्री वीर निर्वाण संवत्सर..... मासेपक्षे.....तिथौ.....वर्षे..... वासरे नगरे/जैनेन्द्र मंदिरे....लग्ने भूमिं शुद्धयर्थं पात्र शुद्धयर्थं शांतयार्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न गन्ध पुष्पाक्षत श्री फलादिशोभितं शुद्ध प्रासुक तीर्थ जल पूरितं मंगल कलश स्थापनं करोमि श्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा ।

नोटःहह यहाँ पर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी, हल्दी, 1.25 रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगल कलश सौभाग्यवती महिला-पुरुष जोड़ी से स्थापना करवाएँ ।

संकल्प मंत्र

ॐ जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे.....देशेप्रान्ते..... नगरे श्री 1008 जिनालये.....श्री वीर निर्वाण संवत्..... मासे..... पक्षेतिथौ..... वासरे शुभ वेलायां परमार्थानां देव शास्त्र गुरुणां सन्निधे विधान करिष्यामि इह संकल्पं कुर्मः । निर्विघ्न समाप्तिर्भवतु । अहं नमः स्वाहा ।

दीपक स्थापना

रचिर दीपकरं शुभदीपकं सकल लोक सुखाकरमुज्ज्वलम् ।
तिमिर जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा ॥

(ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं स्थापयामि) इति स्वाहा ।
आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें ।

अभिषेक पाठ

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः ।
समाहितौ यथाम्नाय, करोमि सकली क्रियाम् ॥

ॐ हां हीं हूं हौ हः अ सि आ उ सा नमः पवित्रतर जलेन सर्वांग शुद्धि करोमि
इति स्वाहा ।

श्री मञ्जिनेन्द्र-मभि-वन्द्य जगत्त्रयेशम् ।
स्याद् वाद-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम् ॥
श्री मूल संघ सुदृशां सुकृतैकहेतरः ।
जिनेन्द्र - यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि ॥1॥

ॐ हीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

यहाँ पर सभी पात्र आभूषण, कंकण, माला, अंगुठी, हार, मुकुट धारण करें ।

श्री मन मंदर सुंदरे शुचि जलै धौतैः सदर्भाक्षतेः ।
पीठे मुक्ति वरम निधाय रचितम त्वत् पाद पद्मस्रजः ॥
इंद्रोऽहं निज-भूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्रा कङ्कण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीतं
धारयामि । मम् गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

आभूषण पहनने का मंत्र

सौगंध संगत मधुव्रतझडकृतेन ।
संवर्ण्य मान मिव गंध मनिन्द्य मादौ ॥
आरोपयामि विबुधेश्वर वृन्द वन्द्य ।
पादारविन्द मभिवन्द्य जिनोत्तमानाम ॥3॥

ॐ हीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुनलेपनं करोमि ।

भूमि शुद्धि मंत्र

ये संति केचिदिह दिव्य कुल प्रसूता ।
नागाः प्रभूत बल दर्प युता विबोधाः ॥
सरंक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषाम् ।
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥4॥

ॐ हीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा ।

पीठ प्रक्षालन मंत्र

क्षीरणं वस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः ।
प्रक्षालितं सुर वरैर्यदनेक वारम् ॥
अत्युद्यमुद्यतमहं जिनपादपीठं ।
प्रक्षालयामि भव संभव भव तापहारि ॥

ॐ हां हीं हूं हौ हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं
करोमि इति स्वाहा ।

श्रीकार लेखन मंत्र

श्री शारदा सुमुख निर्गत बीज वर्णम् ।
श्री मङ्गलीक वरसर्व जनस्य नित्यम् ॥
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश विघ्नं ।
श्रीकार वर्ण लिखितं जिन भद्रपीठे ॥

ॐ हीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि इति स्वाहा । (यहाँ पर सिंहासन पर श्री लिखें ।)

श्रीजी को विराजमान करने का मंत्र

यं पाण्डुकामल शिलागतमादिदेव ।
मस्नापयन् सुरवराः सुर शैल मूर्ध्नि ॥
कल्याण मीप्सुरहमक्षत तोय पुष्पैः ।
संभावयामि पुर एव तदीय विम्बम् ॥

ॐ हीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पाण्डुक शिलापीठे
स्थापनम् इति करोमि ।

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरौप्य ।
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ॥
सवांह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ।
संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते ॥

(नीचे लिखे मन्त्र को बोलते हुए चारों कोनों पर स्थापित कलशों में जलधारा छोड़ें। पश्चात् पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवे श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिच्छे केशरी-
पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिंधु-रोहित-रोहितास्या-हरित्-हरिकांता सीता-
सीतोदा-नारी-नरकांता सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधि शुद्धजलं
सुवर्णघटं प्रक्षिप्तं नवरत्न-गन्ध पुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झं झं झ्रौं
झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं दां दां दीं दीं असि आ उ सा नमः स्वाहा ।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जल से अभिषेक करें।)

दूरावनम्र - सुरनाथ - किरीट - कोटी ।
 संलग्न - रत्न किरणच्छवि धूसराङ्घ्रिम् ॥
 प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टैर् ।
 भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ॥

(1) ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिवर्धमानपर्यन्तं-चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते... नाम्नि नगरे... जिन चैत्यालय मध्ये अद्य वीर निर्वाण सं... मासोत्तम मासे... पक्षे... तिथौ... वासरे पौर्णालिक/माध्याह्निक/अपराह्निक समये मुनि-आर्यिका-श्रावक श्राविकाणां सकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिर्षिंचे नमः स्वाहा ।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं

इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रा द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन
जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

हमने संसार सरोवर में प्रभु अब तक गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को जलधारा देने आए हैं॥

नोट - उपर्युक्त दोनों मंत्रों में से एक मंत्र बोलना चाहिये ।

अर्घ हृह उदक चन्दन तंद्रुल महं यजे॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णलशैर्निखिलावसानम् ।
संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं
इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽहंते भगवते श्रीमते पवित्रतर चतुः
कोणकुंभकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

अर्घ हृह उदक चन्दन तंदुल महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री त्रिभुवनपते चतुः कलशेन धारा करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुः समाद्ध्यैः रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः ।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं
इवीं श्वीं श्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर
पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

अज्ञान महातम के करण हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥

अर्घ हृह उदक चन्दन तंदुल महंयते ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री त्रिभुवनपते पूर्णसुगंधितकलशेन धारा करोमि नमोऽहंते अर्घ
निर्वपामिति स्वाहा ।

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वंशकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरस्रसंघोपसर्ग विनाशाय, घाति कर्म विनाशाय, अघातिकर्म विनाशनाय । **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व गुल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद । **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद ।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु ।
सर्व जनानंदनं कुरु कुरु । सर्व भव्यानंदनं कुरु कुरु । सर्व गोकुलानंदनं कुरु
कुरु । सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं कुरु कुरु ।
सर्व लोकानंदनं कुरु कुरु । सर्व देशानंदनं कुरु कुरु । सर्व यजमानानंदनं कुरु
कुरु । सर्व दुखं हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं ।

अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥

शिव मस्तु । कुल-गौत्र-धन-धान्यं सदास्तु । चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-
वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः ।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्त्ये नमः ।
श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग
उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रउपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय
ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य
तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा ।

सपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र साम्राज्य तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥

अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैः चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल मंगल गानरवाकुले जिन ग्रहे जिननाथ महंयजे ॥

ॐ हीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ ।)

निर्मलं निर्मली करणं पवित्रं पाप नाशनम् ।

जिन गंधोदकं वन्दे कर्माष्टकं निवारणम् ॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी तुम ही हो सरताज ।
मुक्ति वधु के कंत तुम तीन भुवन के राज ॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन भवदधि-शोषण हार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिव सुख के करतार ॥3॥
हरता अघ अंधियार के करता धर्म प्रकाश ।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुण रास ॥4॥
धर्माभूत उर जलधि सों ज्ञान भानु तुम रूप ।
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहुँ जग भूप ॥5॥
मैं बन्दों जिन देव को करि अति निरमल भाव ।
कर्म बंध के छेदने और न कछू उपाय ॥6॥
भविजन को भव कूप तैं तुम ही काढ़न हार ।
दीन दयाल अनाथ पति आतम गुण भंडार ॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो धोय कर्म रज मेल ।
सरल करी या जगत् में भविजन को शिवगेल ॥8॥
तुम पद पंकज पूजतैं विघ्न रोग टरजाए ।
शत्रु मित्रता को धरें विष निरविषता थाय ॥9॥

चक्री खगधर इंद्र पद मिलें आप तैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहें नेम सकल हनि पाप ॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जलबिन मीन ।
जन्म-जरा मेरी हरो करो मोहि स्वाधीन ॥11॥
पतित बहुत पावन किए गिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे कुधी जय-जय-जय जिनदेव ॥12॥
थकी नाव भवदधि विषें तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय-जय-जय जिनदेव ॥13॥
राग सहित जग में रूल्हो मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबै मेटो राग कुटेव ॥14॥
कित निगोद कित नारकी कित तिर्यच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ॥15॥
तुमको पूजें सुरपति अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार ।
मैं डूबत भव-सिंधु में खेव लगाओ पार ॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारिकैं कीजे आप समान ॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं जग उतरत है पार ।
हा हा डूब्यो जात हों नेक निहार निकार ॥19॥

जो मैं कहूँ और सों तो न मिटे उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी तातें करों पुकार ॥20॥
बंदों पाँचों परम गुरु सुर गुरु वंदत जास ।
विघ्नहरण मंगल करण पूरण परम प्रकाश ॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधुनमि रचो पाठ सुखदाय ॥22॥
मंगलमूर्ति परम पद पंच धरों नित ध्यान ।

पुष्पाञ्जलिं क्षेपण करें ।

मंगल पाठ

हरो अमंगल विश्व का मंगल मय भगवान ॥23॥
मंगल जिनवर पद नमों मंगल अर्हत् देव ।
मंगलकारी सिद्ध पद सो बन्दों स्वयमेव ॥24॥
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करों बन्दों मन वचकाय ॥25॥
मंगल सरस्वती मातका मंगल जिन वर धर्म ।
मंगल मय मंगल करन हरो असाता कर्म ॥26॥
या विधि मंगल करन से जग में मंगल होय ।
मंगल नाथूराम यह भव सागर दृढ़ पोत ॥27॥

अथ अर्हत् पूजा प्रतिज्ञायां ॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

कायोत्सर्गं करोमि

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि ।

चत्तारि मंगलम् अरिहंता मंगलम् सिद्धा मंगलम् साहू मंगलम् केवलि पण्णतो
धम्मो मंगलम् । चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरिहंते शरणं पव्वज्जामि ।
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णतं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (परि पुष्पांजलि क्षिपामि) ।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा ।
ध्यायेत पंच नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाम् गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत परमात्मानम् सः बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥2॥
अपराजित मंत्रोद्यम्-सर्व विघ्न विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमम् मंगलं मताः ॥3॥
एसो पंच-णमो-यारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥4॥
अर्ह-मित्यक्षरम् ब्रह्म-बाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्ध चक्रस्य सद् बीजं सर्वतः प्रणमाभ्यहम् ॥5॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतम् सिद्ध चक्रम् नमाम्यहम् ॥6॥

विघ्नौघाः प्रलयं यांति-शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरः ॥7॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनकल्याणमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्त सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवन जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चंदन-तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः ।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र दशोध्याय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

भक्तामरः-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिने-पाद युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥1॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै-निबद्धां ।
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ॥
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं ।
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ 2 ॥

ॐ ह्रीं मानतुंगाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्र काव्यम् अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्री मञ्जिनेन्द्र - मभिवंध - जगत्त्रयेशं ।
स्याद् वाद नायक-मनंत-चतुष्ट-यार्हम् ॥
श्री मूल-संघ-सुदृसाम सुकृतैक-हेतुः ।
जैनैन्द्र-यज्ञ-विधिरेषु मयाभ्यधायि ॥1॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरुवे जिन-पुंगवाय ।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ॥
स्वस्ति प्रकाश-सह-जोर्जित दृङ्मयाय ।
स्वस्ति प्रसन्न ललिताद-भुत वैभवाय ॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्-विमल बोध सुधा-प्लवाय ।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभास-काय ॥
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्-गमाय ।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥3॥

द्रव्यस्य शुद्धि - मधि - गम्ययथानु रूपं ।
भावस्य शुद्धि - मधिकामधि गंतु कामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य बल्गन् ?
भूतार्थ - यज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥4॥

अर्हंत पुराण - पुरुषोत्तम् - पावनानि ।
वस्तूनन्यूनमखिलान्ययमेक एव ॥
अस्मिन् - ज्वलद् विमल - केवल बोध वह्नौ ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाऽग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री संभवः स्वस्ति स्वस्ति श्री अभिनंदनः ।
श्री सुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्री पद्मप्रभुः ।
श्री सुपार्थः स्वस्ति स्वस्ति श्री चंद्रप्रभुः ।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्री श्रेयांशः स्वस्ति स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।
श्री विमलः स्वस्ति स्वस्ति श्री अनंतः ।
श्री धर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्री शांतिः ।
श्री कुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्री मल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्री वर्द्धमानः ।

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानम्

(॥ परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ॥)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्या-प्रकंपाद-भुत केवलौघाः । स्फुरन मनः पर्यय शुद्ध बोधाः ॥
दिव्यावधिज्ञान बलप्रबोधाः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें ।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजम् । सभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धि-बलं दधाना । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरात् । आस्वादन घ्राण विलोकनानि ॥
दिव्यान-मतिज्ञान बलाद्ब्रह्मंतः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥3॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः । प्रत्येक बुद्धाः दश सर्व पूर्वैः ॥
प्रवादिनोष्टांग निमित्त विज्ञाः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥4॥
जडघा वलि श्रेणि-फलाम्बु तन्तु । प्रसून वीजांकुर चारणाहवाः ॥
नमोऽगण स्वैर विहारिणश्च । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥5॥
अणिमि दक्षाः कुशला महिमि । लघिमि शक्ताः कृतिनो गरिमि ॥
मनो वपुः वाग्वलिनश्च नित्यम् । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥6॥
सकाम-रूपित्व-वशित्व मैश्वर्यम् । प्राकाम्य मन्तर्धिमथासिमाप्ताः ॥
तथाऽप्रतीधात गुण प्रधानाः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं । घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः ॥
ब्रह्मा परम घोर गुणाश्चरंतः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥8॥
आमर्ष सर्वोषधयस्तथाशी । विषंविषा दृष्टि विषं विषाश्च ॥
सखिल्लविऽजल्लमलौषधीशाः । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥9॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्रघृतम स्रवन्तो । मधु स्रवन्तोप्य-मृतम् स्त्रवन्तः ॥
अक्षीण संवास महानसाश्च । स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥10॥

॥ परमार्षि स्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

हम इंसान हैं शैतान को इंसान बनायेंगे, हम इंसान हैं इंसान को इंसान बनायेंगे ।
हम पथिक हैं मोक्ष मार्ग के बंधु, हम इंसान से इंसान को भगवान बनायेंगे ॥

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता
अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु
जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए॥
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा॥

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ॥

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा - मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छतिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पञ्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई ।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई ।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ॥
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई ।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम ।
“विशद” भाव से कर रहे, शत-शत बार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता ।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें ॥

इत्याशीर्वाद :

शान्तिनाथ स्तवन

दोहा - जग की भ्रान्ति मैटकर, दो शान्ति हे नाथ !
अखिल शान्ति के भाव से, झुका चरण में माथ ॥

हे नाथ ! आपके गुण अनुपम, जिनका कोई आदी अन्त नहीं ।
गम्भीर अपरिमित हैं अगणित, न मिलते जग में और कहीं ॥
जगती पर रहते नहीं प्रभो ! फिर भी जगती पति कहलाते ।
जगती के जीव सभी आकर, तब चरणों वन्दन को आते ॥1॥

तुम पूज्य त्रिलोकी नाथ रहे, महिमा भी अपरम्पार रही ।
तब स्याद्वाद से युक्त परम, वाणी इस जग में श्रेष्ठ कही ॥
नर सुर न जिसको झेल सकें, गणधर उसका व्याख्यान करें ।
जो भव्य जीव हैं इस जग में, वह सभी पूर्ण सम्मान करें ॥2॥

हे नाथ ! अनाथों के जिनवर, तुम दीनानाथ कहे जाते ।
जो नाथ कहे हैं इस जग में, वह शरण आपकी सब पाते ॥
हम शरणागत बनकर आए, दो चरण शरण हमको भगवन् ।
प्रभु शीश झुकाकर करते हैं, हम चरणों में शत शत वन्दन ॥3॥

तुम करुणाकर सर्वेश्वर हो, अतिशय महिमा को कौन कहे ।
यह भक्त आपका द्वार खड़ा, क्यों वह इस जग के कष्ट सहे ॥
हो पार करैया भक्तों के, हमको भव पार कराओगे ।
हम भक्त बनेंगे जनम-जनम, जब तक लेने न आओगे ॥4॥

तुम लोक हितेषी एक मात्र, जन-जन के बन्धु निष्कारण ।
प्रभु नहीं लोक में दिखता है, तुम बिन कोई और तरण तारण ॥
मेरे मनहर मन मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आओगे ।
विश्वास लिये यह भक्त खड़ा, इसको न तुम बिसराओगे ॥5॥

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना

हे शान्तिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन ।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन ॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो ।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो ॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को ।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को ॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं ।
आह्वान करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी, सर्व लोकोत्तम, जगतशरणं परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं ।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं ॥
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो ।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥1॥

ॐ हां ह्रीं हूँ हौं हः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है ।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांति हर लेता है ॥

हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो ।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं ।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं ॥
हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो ।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥3॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए ।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए ॥
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो ।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥4॥

ॐ त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए ।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए ॥
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो ।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो ॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा ।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा ॥

मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो ।

हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥6॥

ॐ झां झीं झूँ झौं झः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय
मोहांधकार विनाशनाथ दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन ।

किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन ॥

हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो ।

हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय
अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए ।

हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए ॥

दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो ।

हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥8॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय
मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है ।

पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है ॥

हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो ।

हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतिमय हो ॥9॥

ॐ अ हां सि हीं आ हूँ उ हौं सा हः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री
शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान् ।

चय कीन्हे सर्वार्थ सिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण ॥

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।

भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ क जय-जय कर ॥1॥

ॐ हीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी ।

तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी ॥

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।

भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ क जय-जय कर ॥2॥

ॐ हीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।

केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण ॥

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।

भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ क जय-जय कर ॥3॥

ॐ हीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान् ।

चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान ॥

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।

भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ क जय-जय कर ॥4॥

ॐ हीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी ।
गिरि सम्मोद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी ॥
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कर ॥५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा – शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल ।
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ॥

तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...

हमारे हृदय कमल पर आन, विराजो शान्तिनाथ भगवान ।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ॥
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ... ।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ॥
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ॥
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ॥
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ॥
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ॥

तीर्थकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ॥
तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ॥
उँकार मय जिनकी वाणी, जन-जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ॥
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ॥
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ॥
शान्ति नाथ शान्ति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ॥
शरणागत बन शरण में आए, तब चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ॥
रोम-रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तब जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ॥
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ॥
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना-अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ॥
शान्ति नाथ हैं शान्ति सरोवर, शान्ति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योतिमान – विराजो ... ॥

दोहा - शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी ।

चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी ॥

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय महाअर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

सोरठा - शांति मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की ।

रहे कोई न शेष, दुःख दारिद्र सब दूर हो ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा - अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, हुए शांति के नाथ ।

पुष्पाञ्जलि करता परम, चरण झुकाऊँ माथ ॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन ।

हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन ॥

हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो ।

वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो ॥

यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को ।

हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को ॥

तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं ।

आह्वान करने हेतु नाथ ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत शरण परम शान्तिप्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र !

अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम्

सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, अनुपम पाया केवल ज्ञान ।

अतिशय शांति पाने वाले, सर्व लोक में हुए महान् ॥

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के हितकारी ।

प्रभु की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म दर्शनावरणी भाई, क्षण में आप विनाश किए ।

केवल दर्शन निज शक्ति के, द्वारा आप प्रकाश किए ॥

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के हितकारी ।

प्रभु की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी ॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारे जग को मोहित करता, मोहनीय है कर्म विशेष ।

सर्व नाश कर उस शत्रु का, पाए जिनवर सौख्य अशेष ॥

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के हितकारी ।

प्रभु की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी ॥3॥

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्षमार्ग में जो अनादि से, विघ्न डालता रहा महान् ।

अन्तराय का नाश किए जिन, सुख अनन्त पाए भगवान् ॥

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के हितकारी ।

प्रभु की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी ॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा - अनन्त चतुष्टय प्राप्तकर, जग में हुए महान् ।
अतः आप इस लोक में, कहलाए भगवान् ॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीय वलयः

दोहा - प्रातिहार्य से शोभते, भूपर श्री जिनराज ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, श्री जिनेन्द्र पद आज ॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन ।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन ॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो ।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो ॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को ।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को ॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं ।
आह्वानन् करने हेतु नाथ ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम्
सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्ट प्रतिहार्य के अर्घ्य

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु सहित प्रधान ।
प्रातिहार्य है तरु अशोक शुभ, हं बीजाक्षर युक्त महान् ॥
कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥1॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मण्डिताय शोभनपद प्रदाय ह्रस्वर्धू बीजाय सर्वोपद्रव
शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु युक्त प्रधान ।
प्रातिहार्य सुर पुष्पवृष्टि शुभ, भं बीजाक्षर सहित महान् ॥
कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥2॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभन पद प्रदाय भ्रस्वर्धू
बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु युक्त प्रधान ।
प्रातिहार्य जिन दिव्यध्वनि शुभ, मं बीजाक्षर सहित महान् ॥
कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥3॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्य ध्वनि शोभन पद प्रदाय भ्रस्वर्धू
बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु युक्त प्रधान ।
धवल चँवर शुभ प्रतिहार्य शुभ, रं बीजाक्षर सहित महान् ॥
कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥4॥

ॐ ह्रीं चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरोज्ज्वल शोभनपद प्रदाय र्भ्रस्वर्धू बीजाय
सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्नि बिन्दु संयुक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन ।
 प्रातिहार्य है सिंहासन शुभ, घं बीजाक्षर मन भावन ॥
 कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
 शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥5॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्वर्यु
 बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन ।
 प्रातिहार्य है भामण्डल शुभ, झं बीजाक्षर मन भावन ॥
 कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
 शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥6॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डल प्रातिहार्य शोभन पदप्रदाय इम्ल्वर्यु
 बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन ।
 प्रातिहार्य दुन्दुभि मनोहर, सं बीजाक्षर मनभावन ॥
 कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
 शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥7॥

ॐ ह्रीं दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दुन्दुभि प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्वर्यु
 बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन ।
 छत्रत्रय है प्रातिहार्य शुभ, खं बीजाक्षर मन भावन ॥
 कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
 शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥8॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मण्डिताय छत्रत्रय प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय ख्म्ल्वर्यु
 बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

ह भ म र घ झ स ख, बीज वर्ण जग में पावन ।
 प्रातिहार्य वसु युक्त जिनेश्वर, तीन लोक में मनभावन ॥
 कामदेव चक्री तीर्थकर, पद का पाए हैं साम्राज ।
 शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य सहिताय अष्ट बीजमण्डन मण्डिताय सर्व विघ्नहराय सर्वोपद्रव
 शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

तृतीय वलयः

दोहा - सोलह कारण भावना, भावे जो भवि जीव ।
 तीर्थकर पद प्राप्तकर, पावे सौख्य अतीव ॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन ।
 हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन ॥
 हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो ।
 वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो ॥
 यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को ।
 हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को ॥
 तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं ।
 आह्वानन् करने हेतु नाथ ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत्शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !
 अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम्
 सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

(अडिल्ल छन्द)

दर्श विशुद्धि भावना भाऊँ भाव से, निर्मल सम्यक् दर्शन पाऊँ चाव से।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

विनय सम्पन्न भावना भाऊँ भाव से, मुक्तिवधु से नाता जोड़ूँ चाव से।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

निरतिचार व्रत शील सुव्रत पालन करूँ, सम्यक् चारित से कर्मों को परिहरूँ।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

हो अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग मेरा प्रभो ! केवल ज्ञान प्रकट हो जावे हे विभो।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

हितकारी संवेग भाव मेरे जगे, भव तन भोग विरक्ति में भी मन लगे।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति पूर्वक त्याग करूँ मैं भाव से, सर्व परिग्रह त्याग करूँ निज चाव से।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित शक्ति तस्त्याग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिपूर्वक तप का पालन हो सदा, मन में मेरे खेद नहीं जागे कदा।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि प्राप्त करूँ शुभ भाव से, भव सागर हो पार धर्म की नाव से।

तीर्थकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना ॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चौपाई)

वैयावृत्य करण दुखहारी, संतों की सेवा सुखकारी।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥9॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैयावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

करूँ भाव से अर्हत् भक्ति, भव सागर से पाऊँ मुक्ति।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥10॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हत् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

आचार्यों के दर्शन पाऊँ, भक्ति करके मैं हर्षाऊँ।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥11॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

बहुश्रुत भक्ति है सुखकारी, ज्ञान प्रदायक मंगलकारी।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥12॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

प्रवचन भक्ति में कर पाऊँ, जैनागम से ज्ञान बढ़ाऊँ।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥13॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

आवश्यक अपरिहार्य भावना, पूर्ण होय न हो विराधना।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥14॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकपरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

जैन धर्म की हो प्रभावना, विशद हमारी यही भावना।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥15॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

वत्सल भाव हृदय में जागे, रक्षा में मेरा मन लागे।

भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थकर शुभ पदवी पाऊँ ॥16॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वत्सल्य भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

(गीता छन्द)

सोलह कारण भावना हम, भाव से भाते रहें।

आपदाएँ हों कोई भी, शांत होकर सब सहें॥

दर्शन विशुद्धि भावना शुभ, श्रेष्ठ मंगलमय अहा।

बिना इसके अन्य का कुछ, भी प्रयोजन न रहा॥

दोहा – सोलह कारण भावना, जग में मंगलकार।

पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, पाने भव से पार॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि आदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

चतुर्थ वलयः

दोहा – श्री जिन की पूजा करें, आकर बतिस देव।

पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, पाने जिन पद एव॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, एरादेवी के नन्दन।

हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन॥

हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।

वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो॥

यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को॥

हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को॥

तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।

आह्वानन् करने हेतु नाथ ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं॥

ॐ ह्रीं सर्व मंगलकारी लोकोत्तम जगत्शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम्
सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

32 इन्द्रों के अर्घ्य

तर्ज – चौबीसी पूजन

जिन पूजा को असुरेन्द्र, उत्तम द्रव्य लावें।

अति हर्ष भाव के साथ, प्रभु के गुण गावें॥

भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।

श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥1॥

ॐ ह्रीं असुर कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव
वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं विद्युत कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सुपर्ण कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अग्नि कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पदमार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं मारुत कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं स्तनित कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव
वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



ॐ ह्रीं उदधि कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं द्वीपेन्द्र कुमारन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ अष्ट द्रव्य के साथ, दिक् असुरेन्द्र मही ।
अति हर्ष भाव के साथ, आवें यहाँ सही ॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा ।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा ॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल छन्द)

किन्नर के स्वामी आवें, नाचें गावें हर्षावें ।
जिन पूजा करते भारी, इस जग में अतिशयकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

किम्पुरुष इन्द्र जब आवें, भक्ति में ही रम जावें ।
जिन पूजा करते भारी, इस जग में मंगलकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ इन्द्र महोरग आवें, जिन पूजा कर हर्षावें ।
करते हैं अतिशय भारी, इस जग में मंगलकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी हम पूजा करें तुम्हारी ॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गन्धर्व इन्द्र जब आवें, वह नाचे ढोल बजावें ।
पूजा करता शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥14॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यक्षेन्द्र शरण में आवें, जिन महिमा को दर्शावें ।
जिन पूजा करता भारी, परिवार सहित शुभकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥15॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

राक्षस के इन्द्र भी आवें, कौतूहल खूब दिखावें ।
करते पूजा शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूतेन्द्र भक्ति से आवें, महिमा भारी दिखलावें ।
पूजा करते हैं भारी, इस जग में मंगलकारी ॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता ।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥17॥

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यहाँ पिशाचेन्द्र भी आवें, जिन पूजा कर हर्षावें।
अतिशय दिखलावें भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इन्द्र चन्द्रमा आवे, परिवार साथ में लावे।
पूजा करता है भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ सूर्य इन्द्र भी आवे, जिन पूजाकर हर्षावे।
जो करे रोशनी भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ति दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥20॥

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द शम्भू)

सौधर्म इन्द्र पुलकित होकर के, कलश नीर के भरते हैं।
पूजा अरु अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का करते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षित हो ईशान स्वर्ग के, इन्द्र चरण में आते हैं।
पूजा करते भक्ति भाव से, अतिशय चंवर दुराते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥22॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत कुमार इन्द्र भक्ति से, जिनको शीष झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, अतिशय चंवर दुराते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥23॥

ॐ ह्रीं सनत कुमारैन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र स्वर्ग के इन्द्र भक्ति से, वन्दन करने आते हैं।
अर्चा करते विस्मयकारी, अतिशय चंवर दुराते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म युगल के स्वर्गों से भी, इन्द्र शरण में आते हैं।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजन कर हर्षाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय
श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र शुभ द्रव्य मनोहर, लेकर पद में आते हैं।
पूजा करके भक्ति भाव से, चरणों शीष झुकाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तव युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र युगल के इन्द्र स्वर्ग से, पूजा करने आते हैं।
स्वर्ण थाल में द्रव्य सजाकर, अतिशय कई दिखाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र जिन चरण कमल में, अतिशय प्रीति बढ़ाते हैं।
नृत्यगान करते हैं अनुपम, पूजा नित्य रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥28॥

ॐ ह्रीं शतार युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत स्वर्ग से आनतेन्द्र, जिन भक्ति करने आते हैं।
मंगलमयी द्रव्य से मंगल, पूजन नित्य रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥29॥

ॐ ह्रीं आनत युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र गाजे बाजे से, पूजा करने आते हैं।
अतिशय कारी दिव्य मनोहर, जिन के चरण चढ़ाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणत युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र जिन चरण कमल में, मधुकर बनकर आते हैं।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति में जो, पूर्ण निरत हो जाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥31॥

ॐ ह्रीं आरण युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र जिनवर के चरणों, भव्य भक्ति से आते हैं।
दिव्य पुष्प आदि द्रव लेकर, पूजा शुभम् रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थकर पद धारी हैं।
शान्तिनाथ जिन की भक्ति इस, जग में मंगलकारी है॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर
प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव भवनवासी व्यन्तर अरु, ज्योतिष के सब इन्द्र प्रधान।
सोलह स्वर्गों से आकर के, पूजा करते मंगलगान॥
बतिस देवों ने उत्सवकर, पूजा कीन्हीं मंगलकार।
ऐसे शान्तिनाथ जिन की हम, बोल रहे हैं जय-जयकार॥33॥

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देवेन्द्र पूजिताय परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा – त्रेसठ प्रकृतियाँ प्रभु, करके आप विनाश ।
कमल पुष्प पर शोभते, करते ज्ञान प्रकाश ।
मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

हे शांतिनाथ ! हे विश्व सेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन ।
हे कामदेव हे ! चक्रवर्ति ! है तीर्थकर पद अभिनन्दन ॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो ।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो ॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को ।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को ॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं ॥
आह्वान करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं ॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत्शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम्
सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

63 कर्म प्रकृतियां विनाशी जिन के अर्घ्य

ज्ञानावरण (छन्द जोगीरासा)

मतिज्ञान पर पड़े आवरण, के जिनराज विनाशी ।

विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, लोकालोक प्रकाशी ॥1॥

ॐ ह्रीं मति ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतज्ञान का नाश आवरण, हो गये सम्यक् ज्ञानी ।

विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, वीतराग विज्ञानी ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अवधि ज्ञान पर पड़ा आवरण, पूर्ण रूप से नाशा ।

विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, त्यागी जग की आशा ॥3॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान मनः पर्यय का जिनवर, पूर्ण आवरण नाशे ।

विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, लोकालोक प्रकाशे ॥4॥

ॐ ह्रीं मनः पर्ययज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवल ज्ञानावरणी नाशे, कर्म हुए अविकारी ।

विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, जग में मंगलकारी ॥5॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनावरण (चाल छन्द)

चक्षु पे आवरण आवे, फिर वस्तु न दिख पावे ।

जिससे अनुभव न होवे, इन्द्री की शक्ति खोवे ॥

प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी ।

जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी ॥6॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन चार इन्द्री भाई, यह कर्म आवरण पाई ।

इनसे अनुभव न होवे, अपनी शक्ति यह खोवे ॥

**प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी ।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी ॥7॥**

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जब कर्म आवरण आवे, न अवधि दर्श हो पावे ।
वस्तु का अनुभव भाई, न समीचीन हो पाई ॥
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी ।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी ॥8॥**

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जब कर्म आवरण होवे, तब केवल दर्शन खोवे ।
चेतन का अनुभव प्राणी, न होय कहे जिनवाणी ॥
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी ।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी ॥9॥**

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शम्भू छन्द)

**यह कर्म दर्शनावरण भाई, निद्रा निमग्न कर देता है ।
जीवों में हित के चिन्तन की, शक्ति को जो हर लेता है ॥
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं ।
हो कर्म रहित हे नाथ ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं ॥10॥**

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**निद्रा-निद्रा का उदय होय, तब गहरी नींद सताती है ।
जगकर के सोता पुनः पुनः, कोई बात समझ न आती है ॥
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं ।
हो कर्म रहित हे नाथ ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं ॥11॥**

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जब कर्मोदय हो प्रचला का, निद्रा निमग्न रहते प्राणी ।
बैठे ऊँघें झपकी लेवें, ऐसा कहती है जिनवाणी ॥
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं ।
हो कर्म रहित हे नाथ ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं ॥12॥**

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रचला-प्रचला का उदय होय, तो दांत घिसे अरु लार बहे ।
कर देय मूत्र पुरुषादि भी, बेहोशी जैसा जीव रहे ॥
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं ।
हो कर्म रहित हे नाथ ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं ॥13॥**

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सोते-सोते सब काम करें, पर होश नहीं प्राणी पावें ।
जब नींद खुले तब विस्मय से, आश्चर्य चकित वह हो जावें ॥
स्त्यानगृद्धि कर्मोदय से, इस जग में नाच नचाते हैं ।
हो कर्म रहित हे नाथ ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं ॥14॥**

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहनीय (चाल छन्द)

मिथ्यात्व उदय में आवे, सम्यक्त्व नहीं हो पावे ।
न श्रद्धा उर में जागे, विपरीत धर्म से भागे ॥
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा ॥15 ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यक्त्व पूर्ण न होवे, मिथ्या शक्ति भी खोवे ।
गुड़ दही मिला हो जैसे, इसकी परिणति हो वैसे ॥
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा ॥16 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

मिथ्यात्व पूर्ण खो जावे, सम्यक्त्व उदय में आवे ।
कुछ रहे मलिनता भाई, सम्यक् प्रकृति बतलाई ॥
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा ॥17 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रकृति दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(वीर छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, किया आपने पूर्ण विनाश ।
मोहनीय कर्मों से पाया, पूर्ण रूप तुमने अवकाश ॥

इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार ।

शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥18 ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीक्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

मान अनन्तानुबन्धी का, पूर्ण रूप से करके नाश ।
मार्दव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, कीन्हा सम्यक् ज्ञान प्रकाश ॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार ।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥19 ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

माया अनन्तानुबन्धी को, नाश हुए जो सर्व महान ।
आर्जव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, पाया निर्मल सम्यक् ज्ञान ॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार ।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥20 ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ अनन्तानुबन्धी का, जिनको रहा न नाम निशान ।
उत्तम शौच धर्म के धारी, पाए निर्मल सम्यक् ज्ञान ॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार ।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥21 ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

क्रोध अप्रत्याख्यान, अणुव्रत का घाती कहा ।

नाश किए भगवान, पूज्य हुए हैं लोक में ॥22॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मान अप्रत्याख्यान, को नाशा है आपने ।

अतः हुए भगवान, महिमा जिनकी अगम है ॥23॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माया अप्रत्याख्यान, छल प्रपंच जागृत करे ।

जग में हुए महान्, पूर्ण रूप से शांत कर ॥24॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ अप्रत्याख्यान, न होने दे देशव्रत ।

कर कषाय की हान, पाए जिन अर्हन्त पद ॥25॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई छन्द)

प्रत्याख्यान क्रोध जो होवे, महाव्रतों की क्षमता खोवे ।

उसका नाश किए जिन स्वामी, हुए आप तब अन्तर्यामी ॥26॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्याख्यान मान के होते, महाव्रतों की शान्ति खोते ।

मद की दम को प्रभु नशाए, अर्हत् पदवी को तब पाए ॥27॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माया प्रत्याख्यान उदय हो, महाव्रतों की शान्ति क्षय हो ।

माया की छाया तक नाशी, ज्ञानी आप हुए अविनाशी ॥28॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्याख्यान लोभ आ जावे, प्राणी संयम न धर पावे ।

प्रत्याख्यान लोभ परिहरी, हुए आप जिन मंगलकारी ॥29॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा छन्द)

यथाख्यात न होय, क्रोध संज्वलन उदय से ।

पूर्ण रूप यह खोय, वह अर्हत् पदवी लहे ॥30॥

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मान संज्वलन होय, यथाख्यात न प्राप्त हो ।

इसको प्राणी खोय, केवलज्ञानी जिन बने ॥31॥

ॐ ह्रीं संज्वलन मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यथाख्यात न पाय, माया संज्वलन उदय में ।

जिनवर इसे नशाय, अर्हत् बनते लोक में ॥32॥

ॐ ह्रीं संज्वलन माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ संज्वलन पाय, यथाख्यात न हो कभी ।

अर्हत् पदवी पाय, लोभ संज्वलन नाशकर ॥33॥

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल छन्द)

जब हास्य उदय में आवे, हँस हँस प्राणी खिल जावे ।

प्रभु हास्य कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥34 ॥

ॐ ह्रीं हास्य चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जब रति उदय में आवे, जग से नर प्रीति जगावे ।

प्रभु रती कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥35 ॥

ॐ ह्रीं रति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जब अरति उदय में आवे, अप्रीतिभाव जगावे ।

प्रभु अरति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥36 ॥

ॐ ह्रीं अरति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कोइ इष्टानिष्ट दिखावे, मन में तब शोक मनावे ।

प्रभु शोक कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥37 ॥

ॐ ह्रीं शोक चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कोइ चीज दिखे भयकारी, भय होय उदय में भारी ।

भय कर्म नाश कर भाई, प्रभु अर्हत् पदवी पाई ॥38 ॥

ॐ ह्रीं भय चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वपर गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानी उपजावे ।

प्रभु कर्म जुगुप्सा नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥39 ॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जो व्याकुल होवे भारी, रमने को खोजे नारी ।

प्रभु पुरुष वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥40 ॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरुषों में रमती भारी, उसके वेदोदय नारी ।

प्रभु स्त्री वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥41 ॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नर-नारी की अभिलाषा, रमने की रखते आशा ।

प्रभु वेद नपुंसक नाशी, पद पाए हैं अविनाशी ॥42 ॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

आयु कर्म (चौपाई छन्द)

दिव्य भोग स्वर्गों के पाये, फिर भी तृप्त नहीं हो पाए ।

नाश करें देवायु प्राणी, बनते क्षण में केवलज्ञानी ॥43 ॥

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।

पशूगति में हम भटकाए, वध बन्धन आदि दुख पाए ।

तिर्यचायु के आप विनाशी, पद पाए प्रभु जी अविनाशी ॥44 ॥

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नरकायु में दुःख सहे हैं, शेष कोई भी नहीं रहे हैं ।

नरकायु के हुए विनाशी, पद पाए जिनवर अविनाशी ॥45 ॥

ॐ ह्रीं नरक आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम कर्म (शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेस बनाए हैं।
नरक गति में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं।
नरक गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया ॥46॥

ॐ ह्रीं नरकगति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छेदन भेदन वध बन्धन कई, भूख प्यास के दुःख सहे।
भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे ॥
पशुगति जो नामकर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया ॥47॥

ॐ ह्रीं त्रिर्यच गति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मरण करें नर पशु लोक के, नरक गति जब जाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह की, आकृति प्राणी पाते हैं ॥
यही नरक गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश ॥48॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्गति के जीव मरण कर, पशू गति जब पाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह सम, आकृति में ही जाते हैं ॥
यह तिर्यच गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवल ज्ञानी भगवन्, करते सम्यक ज्ञान प्रकाश ॥49॥

ॐ ह्रीं त्रिर्यचगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मोदय से जग के प्राणी, एकेन्द्रिय तन पाते हैं।
नामकर्म स्थावर पाके, दुःख अनेक उठाते हैं ॥
श्री जिनेन्द्र ने उक्त कर्म का, पूर्ण रूप से नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभु ने, केवल ज्ञान प्रकाश किया ॥50॥

ॐ ह्रीं स्थावर नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही ॥
एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥51॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही ॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥52॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक में त्रिय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति त्रिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही ॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥53॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय
जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे ।
चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे ॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा ।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥54॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उष्ण किरणें सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत है ।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है ॥
कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा ।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥55॥

ॐ ह्रीं आतप नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्रमा सम शीत किरणें, मूल में भी शीत है ।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है ॥
कर्म यह उद्योत भाई, तीव्र दुखदायी महा ।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा ॥56॥

ॐ ह्रीं उद्योत नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शम्भू छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी ।
नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी ॥
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान् ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान ॥57॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी ।
नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी ॥
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान् ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान ॥58॥

ॐ ह्रीं साधारण नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – दाता देना चाहते, दे न पावे दान ।

अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान ॥59॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लेना चाहें लाभ जो, ले न पावे दान ।

अन्तराय यह लाभ है, नाश किए भगवान ॥60॥

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भोग भोगना चाहते, भोग सकें न भोग ।

अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग ॥61॥

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग ।

अन्तराय उपभोग यह, मैटे जिन यह रोग ॥62॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान ।

यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान ॥63॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

राग द्वेष अरु मोह विकारी, भावों से संसारी जीव ।
 भाव कर्म का आस्रव करके, कर्म बन्ध भी करें अतीव ॥
 भाव कर्म का नाश किए जिन, तीन लोक में हुए महान् ।
 अष्ट द्रव्य से पूजा करके, भाव सहित करते गुणगान ॥64 ॥

ॐ ह्रीं भाव कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्य
 निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों का पतझड़ हो जाए, विशद धर्म की आए बहार ।
 द्रव्य कर्म तिरेसठ प्रकृतियाँ, भाव कर्म का हो संहार ॥
 अनन्त चतुष्टय पाने वाले, त्रिभुवन पति बनते अविराम ।
 तीर्थकर जिन शांतिनाथ पद, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥65 ॥

ॐ ह्रीं परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा ।

जाप मंत्र (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं कुरु कुरु नमः स्वाहा ॥

जयमाला

दोहा - विश्व वंद्य तुम हो प्रभु, नाशे कर्म कलंक ।
 गाते हम जयमालिका, आप हुए अकलंक ॥

(छन्द अष्टक)

श्री शांति नाथ की पूजा से, जीवों को शांति मिलती है ।
 जो श्रद्धा भक्ति हृदय धरे, तो ज्ञान रोशनी खिलती है ॥
 प्रभु पूरब भव में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था ।
 सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, यह पुण्य का ही फल पाया था ॥

तैंतिस सागर की आयुपूर्ण, करके तुमने अवतार लिया ।
 श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किया ॥
 माता ने स्वप्न देख सोलह, मन में भारी विस्मय पाया ।
 श्री विश्वसेन नृप ने उसका, फल रानी को था समझाया ॥
 छह माह पूर्व से नगरी में, रत्नों की वृष्टि तीन काल ।
 नो माह गर्भ के अवसर पर, देवों ने आकर की विशाल ॥
 शुभ ज्येष्ठ बदी चौदस अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया ।
 तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया ॥
 सौधर्म इन्द्र ले ऐरावत, श्री हस्तिनागपुर में आया ।
 तब शची ने बालक लिया हाथ, मायामयी बालक पधराया ॥
 सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया ।
 फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पोंछ दिया ॥
 दार्ये पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चार ।
 यह शांतिनाथ हैं तीर्थकर, बोलो सब मिलकर जयकारा ॥
 फिर नाचत गावत इन्द्र सभी, श्री विश्वसेन दरबार जाय ।
 बालक को मां के हाथ सौंप, तन मन में अतिशय हर्ष पाय ॥
 अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया ।
 लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया ॥
 फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी ।
 बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी ॥
 छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योग मयी न हो पाए ।
 भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न हो पाए ॥

यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया ।
 शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया ॥
 फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातिया नाश किए ।
 फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए ॥
 श्री शांतिनाथ तीर्थकर जिन, सोलहवें जग में कहलाए ।
 प्रभु समवशरण उपदेश दिए, तब सुनने भव्य जीव आए ॥
 वह श्रद्धा ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग को अपनाए ।
 पूजा भक्ति कर भाव सहित, श्री जिनवर की महिमा गाए ॥
 फिर ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को प्रभु जी, कर्म अघाती नाश किए ।
 श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए ॥
 प्रभु की महिमा जग में अनुपम, जिसका कोई ओर न छोर कहीं ।
 शांति का दाता अवनी पर, हे नाथ ! आप सम कोई नहीं ॥
 भक्ति से मुक्ति मिलती है, यह आज समझ में आया है ।
 जीवन का पाया राज अहा, जब से तब दर्शन पाया है ॥
 भक्ति कर भगवन् बनते हैं, जो भक्त शरण में आते हैं ।
 क्या त्रिभुवन पति के द्वारे से, कोई खाली हाथों जाते हैं ॥
 हम पूजा करने हेतु नाथ, यह द्रव्य मनोहर लाए हैं ।
 दो मुक्ति हमें भवसागर से, यह फल पाने को आए हैं ॥
 दोहा - कामदेव चक्रेश अरू, जिन तीर्थेश महान् ।
 तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण ॥

ॐ ह्रीं श्री परमशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

दोहा - शान्ति जिन के नाम का, करो विशद तुम जाप ।
 चरण कमल की भक्ति से, कट जायेंगे पाप ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घावली

विद्यमान बीस तीर्थकरों का अर्घ्य

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
 गणधर इन्द्र निहू-तैं धुति पूरी न करी है ।
 दानत सेवक जानके हो जगतेँ लेहु निकार,
 सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार ।
 श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

कृत्रिमाकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
 वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा-वासगान् ॥
 सद्-गन्धाक्षत-पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
 नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये ॥
 सात करोड़ बहत्तर लाख, सु-भवन जिन पाताल में ।
 मध्यलोक में चार सौ अड्डावन, जजों अघमल टाल के ॥
 अब लखचौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे ।
 बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे ॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
 पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम् ।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, दानत वरत करों मन लाय ।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो! ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर पद पाय ।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो! ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरब मय अरघ बनाय, दानत पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों ।
दानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों ॥
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों ॥

नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें ।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचादश-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरब संवार, दानत अधिक उछाह सों ।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, फल दीप धूपायन धरों ।
'दानत' करो निरभय जगत सों, जोर कर विनती करों ॥
सम्मद गढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय ।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै,
मन- वच- तन जजत अमंद, आतम जोति जगै ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ॥
वासुपूज्य वसुपूज- तनुज पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंङ धारी, आनंदकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी ॥
श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं ।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ ॥
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को ।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को ॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पंच बालयति का अर्घ्य

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं ।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं ॥
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती ।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति ॥

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना ।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना ॥
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर दानत सुख पावै ॥
तीर्थकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यैः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तर्षि का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना ॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरे सारे, सकल आनंद विस्तारूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिचारण ऋद्धिधारी सप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चा.च. प.पू. आचार्य

108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्य

पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं ।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं ॥
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांति पाने आये हैं ।
विशद भाव से पद पंकज में अपना शीष झुकाये हैं ॥

ॐ ह्रीं चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर ।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति ! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर ॥

विमल सिंधु के विमल चरण से, करुणा के झरने झरते ।

गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते ॥

ॐ ह्रीं सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आचार्य 108 श्री विरागसागर महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में, अक्षत पुष्प सजाये हैं ।
चरुवर दीप धूप फल लेकर, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं ।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर, हमने तुम्हें बसाया है ।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में, अपना शीष झुकाया है ।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्योः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश मनोहर, अक्षत पुष्प चरु लाये ।
दीप धूप अरु फल को लेकर, अर्घ्य चढ़ाने हम आये ।
हृदय कमल में राजें गुरुवर, सुन्दर सुमन बिछाते है ।
भरत सिंधु के श्री चरणों में, सादर शीष झुकाते हैं ॥

ॐ ह्रीं बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्योः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं ।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं ।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं ॥

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

श्री आदिनाथ परमेश्वर ज्ञान धारी, श्री सिद्ध शुद्ध परमात्म निर्विकारी ।
आचार्य वर्य उपाध्याय सु साधु प्यारे, बंदूँ सदैव पद में ये आगम हैं प्यारे ॥

समुच्चय महाअर्घ्य

में देव श्री अर्हत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ॥1॥
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी ।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन, शिव हेतु सब आशा हनी ॥2॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया-मय पूजूँ सदा ।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहीं कदा ॥3॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजुँ ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजत भजुँ ॥4॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री, गिरनार गिरि पूजूँ सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥5॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस-वसु जयि, होय पति शिव गेह के ॥6॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूजहुँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यपूजा, भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः । दर्शन-विशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नमः । उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः । सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र्येभ्यो नमः ।

जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः । विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थकरेभ्यो नमः । पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः । नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः । पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः । सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः । जैनबट्टी, मूढबट्टी, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराट नगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर मालपुरा आदिनाथ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे देश..... प्रान्ते..... नाम्नि नगरे..... मासानामुत्तमे मासे शुभ पक्षे तिथौ वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थ अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी ।
लखन एकसो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै ॥1॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थकर सुखकारी ।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक ॥2॥
दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी ॥3॥

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको ॥4॥

बसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप ॥5॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले,
कीजे सुखी हे जिन ! शांति को दे ॥6॥

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेश।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देश ॥
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥7॥

दोहा - घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥8॥

सीरत नहीं है अच्छी तो सूरत बेकार है, इंसान नहीं है वह पृथ्वी पर भार है।
आस्था रहित मानव का जीवन व्यर्थ है बन्धु, मानव नहीं पशु है वह जिन्हें धर्म से न प्यार है ॥

अथेष्टक प्रार्थना

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोषढांकुं सभी का ॥
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊँ।
तोलों सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलों न पाऊँ ॥1॥

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम् हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने ॥10॥
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से ॥11॥
हे जगबन्धु ! जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का, क्षय हो सुबोध सुखकारी ॥12॥

(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करो मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भवसागर तरूँ ॥
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव ॥

जिनपूजा तें सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय ।
जिनपूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रमतें पावे निर्वाण ॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥

दोहा - सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान ।

मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान ॥

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान ।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान ॥
जैसी महिमा तुम विषे, और धरे नहीं कोय ।
जो सूरज में ज्योति है, नहीं तारगण होय ॥
नाथ तिहारे नामते, अघ छिनमांहि पलाय ।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय ॥
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानूँ नहीं, शरण राखो भगवान ॥
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय ।
यातैं तव पद भक्तको, भक्ति सहाई होय ॥

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई ।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय ॥1॥
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान ।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ॥2॥

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥3॥
आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण ।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान ॥4॥

इत्याशीर्वादः ।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय ।
भव-भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय ॥1॥

आरती

तर्ज - मारी मां जिनवाणी ...

म्हारे शांति जिनवर, थारी तो जय जयकार ।
हो ... थारे हम द्वारे आए, करने को आरती लाए ॥
दीपक ले मंगलकार थारी तो ।
मन वच तन तुमको ध्याऊँ, भावों से प्रभु गुण गाऊँ ।
कर दो मेरा उद्धार ... थारी ... ॥
सुर नर गुण थारे गाते, भक्ति से शीश झुकाते ।
अर्चा करें मनहार ... थारी तो ... ॥
शांति के तुम हो दाता, जग के हो भाग्य विधाता ।
महिमा है अपरम्पार ... थारी तो ... ॥
महिमा जिन की जो गाते, अक्षय कारी हो जाते ।
होते विशद भव पार ... थारी तो ... ॥

प्रशस्ति

लोका-लोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरु मंगलकार॥1॥
मेरु की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अलग रही पहिचान॥2॥
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र॥3॥
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, जिसमें हैं छह खण्ड।
रहते हैं नर पशु जहाँ, और रहे कई खण्ड॥4॥
कर्मभूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंगलमय रचना बनी, जग में अपरम्पार॥5॥
वर्तमान अवसर्पिणी, में चौबीस जिनेश।
तीर्थकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष॥6॥
कामदेव चक्री हुए, तीर्थकर भी साथ।
सोलहवे तीर्थेश का, नाम है शान्तिनाथ॥7॥
शांतिदायक जो कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध॥8॥
सुख शांति की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव॥9॥
शांति जिन की अर्चना, करे दुःखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्मप्रकाश॥10॥
चैत्र कृष्ण एकम् तिथि, पच्चीस सौ चौतीस।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख जानो बाईस॥11॥
जयपुर शास्त्री नगर में, शान्ति नाथ विधान।
शान्ति के शुभ भाव से, पूर्ण किया गुणगान॥12॥
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जन दें 'विशद', हमको करुणा दान॥13॥
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तिवास॥14॥

परम पूज्य १८ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वान॥
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति
आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं
निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं
निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
 अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।
 काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
 तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
 काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।
 काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
 खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
 क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।
 मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
 विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
 मोह अंध का नाश करो, मम दीप जलाने आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
 अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
 पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
 आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
 पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
 मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।
 प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
 महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
 पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥
 ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
 मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
 श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
 छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
 श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
 बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
 ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
 आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
 मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
 तेरह फरवरी बंसत पंचमी, गुरु बने आचार्य अहा।।
 तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
 निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
 मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
 तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
 तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
 है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
 हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
 हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
 गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
 हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
 सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
 श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
 गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
 हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क
 ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णाचर्य निर्वपामीति
 स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
 मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
 करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
 गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
 नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
 सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
 करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
 गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
 बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
 जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
 करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
 गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धार।
 विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
 गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
 करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
 गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
 सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
 आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
 करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
 गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

vkpk;ZJh108 fo'knllxj thegkjt dhvkjrh

pf'rk& {kq- fo'fukZ;llxj rh

fo'knllxj dhxq.kvkxj dh] 'kq'k eaxy rhi tyk; gks
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
ukFkwjke Jh banj th ds] xHkZ fo'ksa xq; ; vk,A
?kj ?kj [kq'kh ds rhi tys gSa] lc tu eaxy xk,AA
xq#th lc tu eaxy xk,A
x`gR'ikxhdh oSj'xhdh] ys rhi loaudk Fkky gks —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq#oj 'khy ozrksa ds /kkjh] vkre czã fogkjrh]
[kM-x /kkj f'ko iFk ij pyrs] f'kffkykpkj fudkjrh
xq#th f'kffkykpkj fudkjrh
uk jkxhdh uk }s"kh dh] 'kq'k eaxy rhi tyk; —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq; foj'kx fla/kq ls vkdj] roqus nh{kk /kkjh
roqus vius ?kj dks NksM+k] nqfu;k; NksM+h lkjh
xq#th nqfu;k; NksM+h lkjh
'kq'k ;ksxhdh uk Fkksxhdh] ys rhi jru e; vkt gksA
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq#oj vkt u;u ls y[kdj] vkykSfdd lq[k ik;kA
Hkfä Hkko ls vkjrh djd] Qwyk ugha lek;kAA
xq#th Qwyk ugha lek;k
,slsxq#oj dks ,slsefuoj dks] djonudk jdkj gks —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
fo'knllxj dh —

bxkhdh

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य (विधान सूची)

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
10. भगवती आराधना, संकलित
11. विशद श्रमणचर्या, संकलित
12. आराध्य अर्चना, संकलित
13. रत्नकरुण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
14. इष्टोपदेश
15. द्रव्य संग्रह
16. लघु द्रव्य संग्रह
17. समाधि तंत्र
18. सुभाषित रत्नावली
19. जरा सोचो तो
20. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
21. जीवन की मनः स्थितियाँ
22. संस्कार विज्ञान
23. विशद स्तोत्र संग्रह
24. विशद भक्ति पियूष
25. मूक उपदेश - कहानी
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
29. श्री नवदेवता विधान
30. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
31. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
32. श्री चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
33. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
34. मंगलदायक श्री नेमिनाथ विधान
35. श्री महावीर विधान
36. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
37. श्री पंचबालयति विधान
38. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
39. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
40. निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर विधान
41. श्रुत स्कंध विधान
42. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
43. परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ विधान
44. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
45. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
46. श्री याग मण्डल विधान
47. श्री 1008 जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
48. त्रिकाल तीर्थकर विधान
49. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान

vkpk;ZJh108 fo'knllxj thegkjt dhvkjrh

pf'rk& {kq- fo'fukZ;llxj th

fo'knllxj dhxq.kvxxj dh] 'kq'k eaxy nhi tyk; gks
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
ukFkwjke Jh banj th ds] xHkZ fo'ksa xq; ; vk,A
?kj ?kj [kq'kh ds nhi tys gSa] lc tu eaxy xk,AA
xq#th lc tu eaxy xk,A
x`gR'ikxhdh oSj'xhdh] ys nhi lo'udk Fkky gks —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq#oj 'khy ozrksa ds /kkjh] vkre czã fogkj]h]
[kM-x /kkj f'ko iFk ij pyrs] f'kffkykpkj fudkj
xq#th f'kffkykpkj fudkj
uk jkxhdh uk }s"kh dh] 'kq'k eaxy nhi tyk; —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq; foj'kx fla/kq ls vkdj] ro'us nh{kk /kkjh
ro'us vius ?kj dks NksM+k] nqfu;k; NksM+h lkjh
xq#th nqfu;k; NksM+h lkjh
'kq'k ;ksxhdh uk Fkksxhdh] ys nhi jru'e; vkt gksA
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
xq#oj vkt u;u ls y[kdj] vkykSfdd lq[k ik;kA
Hkfä Hkko ls vkjrh djd] Qwyk ugha lek;kAA
xq#th Qwyk ugha lek;k
,slsxq#oj dks ,slsef'woj dks] djo'udk j'adkj gks —
eSavktmk; ; vkjfr;k;A
fo'knllxj dh —

bx'khdh

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य (विधान सूची)

- | | |
|--|---|
| 1. पंच जाप्य | 28. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका) |
| 2. जिन गुरु भक्ति संग्रह | 29. श्री नवदेवता विधान |
| 3. धर्म की दस लहरें | 30. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान |
| 4. विराग वंदन | 31. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान |
| 5. बिन खिले मुरझा गये | 32. श्री चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान |
| 6. जिंदगी क्या ? | 33. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान |
| 7. धर्म प्रवाह | 34. मंगलदायक श्री नेमिनाथ विधान |
| 8. भक्ति के फूल | 35. श्री महावीर विधान |
| 9. विशद पंचांगम संग्रह-संकलित | 36. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान |
| 10. भगवती आराधना, संकलित | 37. श्री पंचबालयति विधान |
| 11. विशद श्रमणचर्या, संकलित | 38. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान |
| 12. आराध्य अर्चना, संकलित | 39. श्री पंचपरमेष्ठी विधान |
| 13. रत्नकरुण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद | 40. निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर विधान |
| 14. इष्टोपदेश | 41. श्रुत स्कंध विधान |
| 15. द्रव्य संग्रह | 42. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान |
| 16. लघु द्रव्य संग्रह | 43. परम शांतिप्रदायक श्री शान्तिनाथ विधान |
| 17. समाधि तंत्र | 44. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान |
| 18. सुभाषित रत्नावली | 45. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान |
| 19. जरा सोचो तो | 46. श्री याग मण्डल विधान |
| 20. चिंतन सरोवर भाग-1, 2 | 47. श्री 1008 जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान |
| 21. जीवन की मनः स्थितियाँ | 48. त्रिकाल तीर्थंकर विधान |
| 22. संस्कार विज्ञान | 49. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान |
| 23. विशद स्तोत्र संग्रह | |
| 24. विशद भक्ति पियूष | |
| 25. मूक उपदेश - कहानी | |
| 26. विशद मुक्तावली (मुक्तक) | |
| 27. संगीत प्रसून भाग-1, 2 | |